Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 5, Sept-Oct – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 25/09/2020 Accepted on : 15/10/2020 Publication Date: 30/09/2020

भीष्म साहनी की औपन्यासिक चेतना

झाला वीरसिंह . डी,
पीएच.डी. शोधछात्र, आणंद इन्स्टिटयूट ऑफ पी.जी.स्टडीज इन आर्ट्स, आणंद, गुजरात
Email - zalavirsinh1984@gmail.com

सारांश : भीष्म साहनी जी मनुष्य की संवेदना को जगाकर उसके विकास के लिए उसमें चेतना-जागृति पैदा करना |उपन्यास में गतिरोध बनकर आनेवाली रूढ़ियों, सांप्रदायिकता और अप्रासंगिक मूल्यों का खुलकर विरोध करती है |संस्थाओं और प्रथाओं में सुधार लाने की भावना को जागृत किया है |समाज और मानव के बीच सेतु बांधने की कोशिश की गई है |सामाजिक परंपरा का त्याग किया गया है| सांप्रदायिकता के लिए जागृति के जरिए समाज-जीवन को नई दिशा देना, मध्यम वर्ग की की दर्द भरी कथा करना उपन्यास का मूल उद्देश्य है |

मुख्य बिंदु : साम्प्रदायिकता, सामाजिक, पूँजीपति, संघर्ष, शोषित |

प्रस्तावना :

आज के युग का सबसे बड़ा सत्य मानवीय पीड़ा और यातना है |माननीय पीड़ा का मुक्ति का मार्ग सबसे पहले प्रेमचंद ने उठाया उनके बाद की पीढ़ी आज भी उस दायित्व का निर्वाह कर रही है |भीष्म साहनी जी उन्हीं कथाकारों में से एक है जिन्होंने मानवीय व्यक्तित्व के लिए निरंतर अनेक जोखिमों को उठाया है और साथ ही संघर्ष भी किया है |भारत विभाजन की असहाय मानसिकता में ,भीष्म साहनी जी ने मानवीय पीड़ा को भोगा है ,अपितु उसे आत्मसात भी किया | स्वातंत्र्योत्तर भारत के संक्रमण कालीन समाज में जिस प्रमाणिकता, सजगता और सामाजिक यथार्थ का निरूपण अपने कथा-साहित्य में किया है वह ,उनकी विशेष उपलब्धि है |

औपन्यासिक चेतना :

भीष्म साहनी यथार्थवादी रचनाकार है |उन्होंने मध्यमवर्गीय जीवन के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आदि विभिन्न पक्षों को लेकर अपने उपन्यासों की रचना की हैं भीष्म | जी ने जिस परंपरा का निर्वाह किया है, वह समाजवादी उपन्यासकारों की ही परंपरा का विकास है,परंतु भीष्म जी संघर्ष किसान और जमींदार से नहीं रहा है, इसलिए उनके कथा-साहित्य में मजदूर-पूँजीपति के संघर्ष का स्वरूप ही आया है |उपन्यासों में यह संघर्ष नारेबाजी और जुलस से हटकर एक नये तरह का संघर्ष है |शोषक वर्ग शोषितों के शोषण के लिए उनके ही वर्ग को हथियार बनाकर इस्तमाल करता है और सामाजिक चेतना के अभाव में अनजाने ही वह हथियार बन जाता है ' |झरोखे' उपन्यास का तुलसी इसलिए सब्जी वाले से लड़ बैठता है और उससे मारपीट कर सब्जी छीनकर ले आना |तमस का नत्थू शोषणों की चाल से अज्ञात है |उनकी चेतना अभी भी सामंती संस्कारों से ग्रस्त है ,परंतु बसंती के मेहरू की चेतना थोड़ी विकसित हो चुकी है " –सरकार तो इन्हें तोड़ेगी ही |हम अपनी मजूरी क्यों छोड़े |हम नहीं तोड़ेगे तो कोई दूसरा आकर तोड़ेगा "|१ पूँजीवादी समाज के लोग शोषक वर्ग को आर्थिक प्रलोभन देकर ही शोषितों को उनके ही विरोध हथियार बनाकर खड़े कर देते हैं |बसंती के मेहरु को पूँजीवादी प्रशासन २०-२० रुपए मजूरी देने का प्रलोभन देकर उनकी बस्ती को तोड़वाता है मे |हरु अन्य राज मिस्त्री भी अपने ही लोगों का खुशी-खुशी से मकान तोड़ना शुरू कर देते हैं अपने मकान को सरकार का कहने में उनको कोई हिचक नहीं होती ' |झरोखे' का तुलसी नौकर है, जिसमें दास्ता की प्रवृत्ति अधिक है |वह अपने स्वामी के लिए सब कुछ करता है और अपना पृथक अस्तित्व समझता ही नहीं |

निम्न वर्ग की नारियाँ संघर्षशील होती है |उन्हें अपने श्रम पर अधिक विश्वास रहता है |वे पराश्रित न होकर आत्मनिर्भर होती है |इसलिए वे पुरुष की दासी न होकर अनेक क्षेत्र में पुरुष के साथ सहयोग करने वाली सहयोगिनी होती है| निम्न वर्ग की नारियों में पूजा उपवास आदि-व्रत ,पाठ-में आस्था ज्यादा दिखाई देता है इस वर्ग |की नारियाँ कभी श्रम से दूर भागती | बसंती एवं बसंती की माँ)बसंती (तथा नत्थू की पत्नी) तमस(अनेक परिस्थिति से संघर्ष करती है, परंतु न तो वे कभी टूटती हैं और न ही निराश होती है |बसंती उपन्यास में एक ऐसी लड़की का चित्रण किया गया है जो महानगरों में आये ग्रामीण लोगों के साथ अपना जीवन व्यतीत करती है |यह भी हो सकता है, कि उसका चेतनागत विकास शहर में ही हुआ है |शहरी जीवन की मानसिकता और चेतना के परिणाम स्वरुप उपन्यास में उसका एक अलग प्रकार का व्यक्तित्व दिखाई देता है |एक स्थिति यह आती है, कि पुरुष से दो कदम आगे चलकर बसंती दीनू और रुकमी का पालन | पोषण अपने श्रम पर करती है-श्रम के प्रति निम्न वर्ग की यह आस्था संघर्षशीलता की प्रवृत्ति पुरुषों में ही दिखाई देती है सामाजिक चेतना के अभाव में भले ही उनका श्रम

शोषण का शिकार बनता है |तुलसी) झरोखे(बसंती का बापू एवं तमाम राजस्थानी मजदूर राज मिस्त्री बसंती नत्थू एवं मिलखी आदि अनेक परिस्थिति में जीने की कला जानते हैं |

भीष्म साहनी जी ने कड़ियाँ उपन्यास में मध्यमवर्गीय परिवार की टूटन की और इंगित कर आधुनिकता के प्रभाव को स्वीकार है इस उपन्यास में एक मध्यमवर्गीय परिवार की टूटन को |यथार्थ की भूमि पर बड़े ही प्रभावशाली ढंग से बखूबी चित्रण किया है प्रे |मिला और महेद्र दोनों पति| पत्नी के बीच रिश्तों की टकराहट दो विरोधी युगीन संस्कारों की टकराहट है- रिश्ते जब मात्रा जीवन का भार बनकर रह जाये तो उनका टूटना भी अनिवार्य है |सहानी इस समस्या का समाधान तलाक के रास्ते से ढूँढते हैं |इस चुनौती को आधुनिकता के संदर्भ में स्वीकार करते हैं ' |तमस' उपन्यास लिखकर भीष्म जी ने यह सिद्ध कर दिया है, कि स्वतंत्रता के बाद भी भारत अँधेरों में जी रहा है |साहनी ने 'तमस' उपन्यास में सांप्रदायिकता की समस्या को उठाया है |भारतीय जनमानस के मस्तिष्क पर अभी भी संप्रदायिकता का जहर छाया हुआ है |सांप्रदायिकता मानव जाति के लिए बहुत ही घातक होता है ' |तमस' में राजनीति के निर्मित धर्म का पर्दाफाश किया है ' |तमस' का रिचर्ड तो कहता है – "हुकूमत करने वाले यह नहीं देखते कि प्रजा में कौन-सी समानता पायी जाती है, उनकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि वे किन-किन बातों में एक"| दूसरे से अलग हैं-२ जिससे इन भिन्नता का लाभ उठाकर प्रजा में हमेशा बदनामी फैलाकर अमन स्थापित करने की वाहवाही लूट सके |तमस उपन्यास में सोहन तेजसिंह तथा गुरुद्वारे में एकत्रित सिक्खों को इस यथार्थ से परिचित कराता है " –हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम लोगों को मुसलमानों के खिलाफ भड़काया जा रहा है और मुसलमानों को हमारे खिलाफ भड़काया जा रहा है "|३ मीरदाद और हरिवंशसिंह मजहबी उन्माद को वैज्ञानिक चेतना के विकास द्वारा कम करने का प्रयास करते हैं किंतु इससे उनको सफलता नहीं मिलती |

भीष्म साहनी ने बताया है कि उपद्रव हिंदू मुसलमान नहीं, एक खास किस्म के लोग करते हैं |ढोल बजाकर मजबूरों को लूटने वाले ये उपद्रवी, बलवाई बहुत ही कमजोर होते हैं, क्योंकि सरकार का शांति स्थापना हेतु मात्र एक हवाई जहाज उनके दूर साहस को, उनकी दंगा करने तथा उपद्रव फैलाने की नीति को रोक देता हैं ' |तमस' की प्रयोजनीयता आज के बदलते हुए युग में भी प्रमाणित होती है |भारत विभाजन काल का सत्य आज का युग सत्य बनकर हमारे सामने उसी तरह सवाल खड़ा कर सोचने को मजबूर कर रहा है |

' नीलू नीलिमा निलोफर' उपन्यास में भीष्म साहनी ने अंतधर्मीय प्रेम विवाह की समस्या को उजागर किया है |दो नारी-पात्रों 'नीलू और नीलिमा' को केंद्र में रखकर प्रेम कथा का निरूपण किया है |नीलू एक मुस्लिम लड़की है, वह हिंदू युवक सुधीर से प्रेम करती है |नीलिमा एक हिंदू युवती है, वह अल्ताफ यानी मुस्लिम युवक से प्रेम करती है |दोनों एक-दूसरे को बेहद चाहने लगते हैं |दोनों का यह पता भी है, कि उनके प्रेम को सफल होने में कई समस्याएँ आ सकती है| जब प्रेम को धर्म के भीतर बाँधना जब शुरू होने लगता है, तब सांप्रदायिकता पैदा होने लगती है |दोनों के परिवार को जब इस बात का पता चलता है, तब अपने | अपने धार्मिक संस्कारों के चलते वे उसका विरोध करते हैं-सुधीर के पिता कहते हैं "न किसी से पूछा, न बताया और आज हमें नोटिस दे रहा है कि मुसलमानी से ब्याह करेगा |हरामी !दूर हो जा मेरी आँख से "|४ तो नीलू का भाई हमीद कहता है" ,तुम हमारे खानदान के मुँह पर कालिख पोत कर गई हो !हमारे खानदान की कोई इज्जत आबरू रही है |इस कस्बे में हमारा पीढ़ियों से रख रखाव है |घर की इज्जत-आबरू को तुमने मिट्टी में मिला दिया है "|५ यह दोनों प्रेमी युगल सामाजिक मर्यादाओं के भीतर दमित और कुंठित होकर दोनों विडम्बनापूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं |इस उपन्यास के माध्यम से लेखक यह इंगित करना चाहता है, कि हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक समस्या के समाधान के लिए व्यक्ति को भीतर से बदलना होगा |

उपसंहार :

निष्कर्षत :हम कह सकते हैं कि भीष्म साहनी अपने उपन्यासों में यह लक्ष्य लेकर चले हैं, कि इतिहास, संस्कृति एवं मूल्यों के यथास्थितिवादी भ्रमों से मुक्त तभी हुआ जा सकता है, जब व्यक्ति को सामाजिक विकास के यथार्थवादी दृष्टिकोण से परिचित कराए जाए|

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१ .तमस ,भीष्म साहनी ,राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली ,वर्ष,१९८२- पृ.२५
२ .तमस ,भीष्म साहनी ,राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली ,वर्ष,१९७७- पृ.४५
३ .तमस ,भीष्म साहनी ,राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली ,वर्ष,१९७७- पृ.१७६
४ नीलू .नीलिमा नीलोफर ,भीष्म साहनी , ,राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली ,वर्ष,२०१४- पृ.२४
५ नीलू .नीलिमा नीलोफर ,भीष्म साहनी ,राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली ,वर्ष-२०१४, पृ.७१